I take strong objection to the mischief done against our nation and demand Government of India to take immediate steps to undo the mischief.

MR. SPEAKER: It will be examined.

(ii) OPEN HEART SURGERY IN ALL-INDIA INSTITUTE OF MEDICAL SCIENCES

SHRI KUSUMA KRISHNA MURTHY (Amalapuram): Sir, under rule 377, I wish to raise the following matter:

I wish to draw the special attention of this House to an important matter relating to an urgent policy matter of national significance.

The assertion that India did not need to provide the facilities for open heart surgery has caused unbelieveable surprise to me in the present context of fast growing heart diseases in our country. This is a matter of absolute national significance, involving public urgency, and this assertion must have surprised every progressive mind in our country, not to speak of our dedicated scientists.

The news item under the caption 'AIIMS needs thorough clean-up' in the 'Hindustan Times' on March 13, 1979 is full of contradictions while causing a lot of misgivings on our national policies, especially those relating to medicine and health. It is quite appreciable to stress on a thorough clean-up in the administration and also for a greater health budget of 7 per cent from the existing 2 per cent of our present national Budget; but it is quite unfortunate that the Director of our country's premier medical institution, namely, the All India Institute of Medical Sciences to believe and speak that "We have no science except political science", while our scientists prove to be highly dedicated and capable of winning even the most prestigeous and coveted Nobel Prize. It is highly damaging to the nation to say that "We have only pseudo-science and we are capable only of duplication." While our great scientists have put India on the world map of atommic power.

Above all, India has a unique place in the entire Asia in the field of Cardio-thoracic surgery and our standard now in open heart surgery is in no way inferior to any of the systems available in any of the advanced Western countries. Thousands of patients come to AIIMS every day for specialized treatment in open-heart surgery and AIIMS is unable to cope up with the heavy demand with the available resources. It is the results which encourage the patients from all over the country to come for the advanced treatment available here. In fact, during the last one decade, our AIIMS has done commendable service in various fields of advanced medical treatment and more particularly in open heart surgery and thereby our AIIMS has occupied a supremely significant place in the world of advanced medical treatment and surgery.

In this context, instead of making further vigorous efforts to strengthen this branch of open heart surgery, it is really very unfortunate for the Director of AIIMS to say that India did not need to provide the facilities for open-heart surgery, clearly implying that the existence of this opportunity for the public, was a total waste in the past, and would be of no use in the future at the AIIMS.

(iii) REPORTED AGITATION BY PRIMARY SCHOOL TEACHERS OF DELHI TO PRESS THEIR DEMANDS.

श्री विनायक प्रसाद यादव (सहरसा) : अध्यक्ष महोदय, मैं नियम 377 के अन्तर्गत अविलम्बनीय लोक महत्व के विषय को सदन में प्रस्तुत करता हूं। राजधानी में विगत कई दिनों से दिल्ली के प्राइमरी टीचर अर्द्ध नग्न अवस्था में धरना, पिकेटिंग और सत्याग्रह अपनी उचित मांगों को ले कर चला रहे हैं। सरकार उन की

[श्री विनायक प्रसाद यादव]

मांगो की ओर मुखातिब होने की बजाय पुलिस टेरर करवा रही है, जिस के चलते शिक्षक समुदायो मे जबर्दस्त विक्षोप पैदा हो रहा है और वे अपना आन्दोलन उग्र करने पर मजबूर किये जा रहे हैं। आज माननीय शिक्षा मंत्री का यह बयान कि शिक्षको की धमकी से वे डरने वाले नही हैं, देख कर आश्चर्य और दुख हुआ है। गरीब शिक्षक धमकी देने की स्थिति में नही है, न वे धमकी देना चाहते है। गरीबी की मार से तबाह हो कर अपनी जायज मांगें शांतिपूर्वक ढग से रख रहे है।

अत: मैं सरकार का ध्यान इस ओर दिलाते हुए, उन की मांगो के सम्बन्ध में वक्तव्य की माग करता हू।

(iv) FUNCTION ORGANISED IN HONOUR OF THE SOVIET PRIME MINISTER UNDER AUSPICES OF INDO-SOVIET CULTURAL SOCIETY.

डा0 रामजी सिंह (भागलपुर) अध्यक्ष महोदय, मै नियम 377 के अधीन अविलम्बनीय लोक महत्व के निम्नलिखित विषय को सदन के सम्मुख प्रस्तुत करता हू।

यह दुख और दुर्भाग्य की बात है कि हमारे माननीय अतिथि सोवियत रूस के प्रधान मंत्री श्री कोसीगिन के शुभागमन पर भारत रूसी मैत्री संघ (इसकास) के तत्वाधान में आयोजित सभा को राजनीतिक रगमच बना दिया गया। 10 मार्च को आयोजित इस बैठक मे सोवियत रूस के प्रधान मत्री के समक्ष श्री राजेश्वर राव और श्री शकर दयाल सिंह न कम्पूचिया को मान्यता नहीं देने के बारे मे भारत सरकार की तीव्र भर्त्सना की और विदेश मत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी की चीन यात्रा की भी प्रखर आलोचना की।

मै यह नही कहता कि हमारी विदेश नीति की हमारे बन्धु आलोचना न करे लेकिन किसी विदेशी मेहमान के स्वागत में आयोजित सभा में उनके सामने यह इस प्रकार की बाते करना राष्ट्र के स्वाभिमान पर कलक तथा साथ ही साथ स्वय देश की एकता का भी हृदय विदारक चित्र उपस्थित करता है। कुछ ही दिनों पहले भारत मे सोवियत समर्थक 14 देशो के राजदूतों ने एक संयुक्त प्रेस कान्फ्रेस करके चीन अथवा वियतनाम के हमले की निन्दा की थी।

प्रत्येक देश किसी भी मामले पर अपनी नीति निर्धारित करने का पूर्ण अधिकारी है। लेकिन हमारी धरती पर इस प्रकार की संयुक्त बयानबाजी और राजनीतिक पेचकश भारत की सार्वभौमिकता का समादर नही है। अगर सरकार इन चीजों के सम्बन्ध में अभी से ध्यान नहीं देगी, तो बढ़ते-बढ़ते छोटा सा फोड़ा भारी भगन्दर का रूप धारण कर लेगा और भारतवर्ष में विदेशी राजनीति की दखलान्दाजी घर कर जाएगी।

इसलिए मैं सरकार से स्पष्ट आश्वासन चाहता हू कि भविष्य मे ऐसे किसी भी संस्था या सघ को विदेशी मेहमानो के स्वागत सत्कार के लिए अनुमति न दी जाये जो इसको गुटपरस्ती और अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति जोड़ तोड़ का अखाड़ा बना देती है और विभिन्न देशो के राजदूत को भी यह स्पष्ट कह दिया जाये कि इस प्रकार की सयुक्त बयानबाजी और प्रेस कान्फ्रेस आदि भारत की भूमि पर न की जाए।

(v) THE JOINT STATEMENT ISSUED BY PRIME MINISTERS OF INDIA AND THE SOVIET UNION.

श्री राज नारायण (राय बरेली). श्रीमन्, हमारे कुछ आर०एस०एस० के मित्र हम को पीछे आने को कह रहे है।

अध्यक्ष महोदय : यह बात स्टेटमेट मे नही है।

श्री राज नारायण : श्रीमन्, मै आप के पुकारने पर तत्काल नही उठा, इसलिए स्पष्टीकरण कर रहा हूं।

श्रीमन्, लोक सभा के प्रक्रिया कार्य तथा सचालन विषयक नियमों के नियम 377 के अधीन मैं निम्न महत्वपूर्ण विषय उठा रहा हूं। आप जरा ध्यान से सुनियेगा क्योंकि अभी डा0 साहब जो बोले है, शायद हमारी ध्वनि उस से कुछ विपरीत जाए।

गत 15 मार्च, 79 को भारत-रूस के प्रधान मंत्रियों ने एक संयुक्त बयान द्वारा चीन को बिना किसी शर्त तत्काल वियतनाम से पूर्णरूपेण चीनी सेना को हटा लेने को कहा है। इस संयुक्त वक्तव्य में एग्रेशन (हमला) शब्द का प्रयोग नहीं किया गया है। यह एक रहस्य है क्योंकि श्री कोसिगिन बराबर एग्रेशन शब्द का प्रयोग करते थे। इस से ऐसा लगता है (व्यवधान)। श्रीमती अब ये पूछते हैं कि एग्रेशन और आक्रमण में क्या फर्क है।

एक माननीय सदस्य : हमले और आक्रमण में ?

अध्यक्ष महोदय : आप स्टेटमेंट में से पढ़िये।

श्री राज नारायण : एग्रेशन का मतलब क्या है ? आप जज रह चुके हैं ? अगर कोई आक्रमण करता है तो प्रोवोकेशन से करता है अगर कोई एग्रेसन करता है तो बिना किसी प्रवोकेशन के करता है। एग्रेशन को हमने हमला कहा है और अटेक को हमने आक्रमण कहा है। वियतनाम से चीन अटैक नहीं किया था।